REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 15 | ISSUE - 4 | JANUARY - 2026

लाल बहादुर शास्त्री के राजनीतिक जीवन और स्वतंत्रता आंदोलन में योगदान का अध्ययन

संदीप कुमार सिंह
शोधार्थी इतिहास
शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

डॉ. श्रीमती पुष्पा दुबे
सहायक प्राध्यापक इतिहास
राजभानु सिंह स्मारक महाविद्यालय, मनिकवार, जिला रीवा (म.प्र.)

सारांश –

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन और स्वतंत्र भारत के राजनीतिक इतिहास में लाल बहादुर शास्त्री का व्यक्तित्व सादगी, नैतिकता, कर्तव्यनिष्ठा और जनसेवा का प्रतीक माना जाता है। वे उन विरल नेताओं में से थे, जिनका सार्वजनिक जीवन आत्मप्रचार से रहित, किंतु राष्ट्रहित के प्रति पूर्णतः समर्पित रहा। एक स्वतंत्रता सेनानी, समर्पित कांग्रेस कार्यकर्ता और स्वतंत्र भारत के द्वितीय प्रधानमंत्री के रूप में उनका योगदान भारतीय राजनीति और राष्ट्रनिर्माण की प्रक्रिया में अत्यंत महत्वपूर्ण है।

मुख्य शब्द – भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन, राजनीतिक, इतिहास, लाल बहादुर शास्त्री, सादगी, नैतिकता, कर्तव्यनिष्ठा और जनसेवा।

प्रस्तावना –

लाल बहादुर शास्त्री का राष्ट्रीय आंदोलन से जुड़ाव उनके छात्र जीवन में ही प्रारम्भ हो गया था। असहयोग आंदोलन के प्रभाव में उन्होंने औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध संघर्ष को अपने जीवन का उद्देश्य बना लिया। स्वतंत्रता आंदोलन के विभिन्न चरणों–असहयोग आंदोलन, सविनय अवज्ञा आंदोलन और भारत छोड़ो आंदोलन में उनकी सक्रिय भागीदारी उनके राष्ट्रवादी प्रतिबद्धता को स्पष्ट करती है। इन आंदोलनों के दौरान उन्होंने अनेक बार कारावास भोगा, परंतु इन कठिन परिस्थितियों ने उनके संकल्प को कमजोर करने के स्थान पर और अधिक सुदृढ़ किया। उनके कारावास के अनुभव स्वतंत्रता आंदोलन के त्याग और बलिदान की परंपरा को मूर्त रूप प्रदान करते हैं।

कांग्रेस संगठन के भीतर लाल बहादुर शास्त्री का व्यक्तित्व एक अनुशासित और समर्पित कार्यकर्ता के रूप में विकसित हुआ। वे न तो उग्र राजनीति के समर्थक थे और न ही अवसरवादी समझौतों के पक्षधर। गांधीवादी विचारधारा से प्रभावित होकर उन्होंने सत्य, अहिंसा और सादगी को अपने जीवन का मूलमंत्र बनाया। कांग्रेस के भीतर विभिन्न संगठनात्मक दायित्वों का निर्वहन करते हुए उन्होंने जमीनी स्तर पर कार्यकर्ताओं और जनता के बीच संवाद स्थापित किया। इस प्रकार उनका योगदान केवल आंदोलन तक सीमित न रहकर संगठनात्मक विकास से भी गहराई से जुड़ा रहा।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् लाल बहादुर शास्त्री का राजनीतिक जीवन एक नए चरण में प्रवेश करता है। स्वतंत्र भारत में उन्होंने विभिन्न प्रशासनिक और राजनीतिक दायित्वों का निर्वहन किया, जिनमें गृह मंत्री और अंततः प्रधानमंत्री का पद प्रमुख है। यद्यपि प्रस्तुत शोध का केंद्रीय विषय उनकी स्वतंत्रता आंदोलन में भूमिका है, तथापि स्वतंत्र भारत में उनके कार्यों का उल्लेख उनके व्यक्तित्व की निरंतरता और नैतिक प्रतिबद्धता को समझने के लिए आवश्यक है। 'जय जवान, जय किसान' जैसे उनके नारे उनके राष्ट्रवादी दृष्टिकोण और जन–समर्पण का सशक्त प्रतीक हैं।

लाल बहादुर शास्त्री का व्यक्तित्व भारतीय राजनीति में नैतिक आदर्शवाद का प्रतिनिधित्व करता है। सत्ता के शिखर पर पहुँचने के बावजूद उन्होंने सादगी और ईमानदारी को कभी नहीं छोड़ा। उनका जीवन इस तथ्य का प्रमाण है कि राजनीतिक नेतृत्व केवल शक्ति और पद का प्रश्न नहीं, बल्कि चरित्र, सेवा और उत्तरदायित्व का भी विषय है। इस दृष्टि से शास्त्री जी का अध्ययन भारतीय राजनीतिक संस्कृति के नैतिक आयाम को समझने में सहायक सिद्ध होता है।

लाल बहादुर शास्त्री का जीवन और व्यक्तित्व भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन और स्वतंत्र भारत के इतिहास में एक नैतिक प्रकाशस्तंभ के रूप में स्थापित है। उनके योगदान का अध्ययन न केवल ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि यह समकालीन राजनीति और समाज के लिए भी प्रेरणास्रोत है। इस प्रकार, लाल बहादुर शास्त्री का परिचय प्रस्तुत शोध की वैचारिक और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को सुदृढ़ करता है तथा उनके स्वतंत्रता आंदोलन में योगदान के गहन अध्ययन के लिए आधार प्रदान करता है।

विश्लेषण –

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के इतिहास में लाल बहादुर शास्त्री का राजनीतिक जीवन उस अनुशासित, नैतिक और संगठननिष्ठ नेतृत्व परंपरा का प्रतिनिधित्व करता है, जिसने आंदोलन को वैचारिक स्थायित्व और प्रशासनिक सुदृढ़ता प्रदान की। उनका राजनीतिक जीवन किसी आकस्मिक महत्वाकांक्षा का परिणाम नहीं था, बल्कि छात्र जीवन से विकसित राष्ट्रवादी चेतना, गांधीवादी मूल्यों तथा सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना का स्वाभाविक विस्तार था। स्वतंत्रता संग्राम में उनकी सहभागिता ने यह स्पष्ट किया कि राष्ट्रीय आंदोलन केवल जननेतृत्व या क्रांतिकारी सक्रियता तक सीमित नहीं था, बल्कि उसमें निरंतर संगठनात्मक परिश्रम और नैतिक प्रतिबद्धता की भी केंद्रीय भूमिका थी।

लाल बहादुर शास्त्री का भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस से जुड़ाव स्वतंत्रता आंदोलन की उस मुख्यधारा का हिस्सा था, जो अहिंसा, सत्य और संवैधानिक संघर्ष के माध्यम से औपनिवेशिक सत्ता को चुनौती देती थी। कांग्रेस संगठन के अंतर्गत उन्होंने एक कर्मठ कार्यकर्ता के रूप में कार्य करते हुए स्थानीय, प्रांतीय और राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न दायित्वों का निर्वहन किया। उनके राजनीतिक जीवन का प्रारंभिक चरण आंदोलन की जमीनी राजनीति से जुड़ा रहा, जहाँ उन्होंने जनता के बीच रहकर राष्ट्रीय चेतना के प्रसार और संगठनात्मक अनुशासन की स्थापना में योगदान दिया।

स्वतंत्रता आंदोलन के विभिन्न चरणों–असहयोग आंदोलन, सविनय अवज्ञा आंदोलन, व्यक्तिगत सत्याग्रह तथा भारत छोड़ो आंदोलन में लाल बहादुर शास्त्री की सक्रिय भूमिका उनके राजनीतिक दृष्टिकोण की निरंतरता को दर्शाती है। उन्होंने आंदोलनों में भागीदारी को केवल विरोध की अभिव्यक्ति न मानकर नैतिक अनुशासन और जनजागरण का माध्यम माना। बार–बार कारावास के बावजूद उन्होंने आंदोलन की अहिंसक और लोकतांत्रिक प्रकृति से कोई समझौता नहीं किया, जो उनके राजनीतिक चरित्र की दृढ़ता को रेखांकित करता है।

लाल बहादुर शास्त्री का राजनीतिक जीवन स्वतंत्रता आंदोलन की व्यापक ऐतिहासिक प्रक्रिया से गहराई से जुड़ा हुआ था। उनके योगदान का अध्ययन न केवल उनके व्यक्तिगत राजनीतिक विकास को समझने में सहायक है, बल्कि यह भी स्पष्ट करता है कि किस प्रकार संगठननिष्ठ, नैतिक और कर्मप्रधान नेतृत्व ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को सफलता की ओर अग्रसर किया। अतः उनके राजनीतिक जीवन और स्वतंत्रता आंदोलन में योगदान का ऐतिहासिक अध्ययन आंदोलन की बहुस्तरीय प्रकृति को समझने हेतु अनिवार्य प्रतीत होता है।

लाल बहादुर शास्त्री का राजनीतिक जीवन भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के उस चरण से आरंभ होता है, जब राष्ट्रीय संघर्ष जनांदोलनों, संगठनात्मक विस्तार और वैचारिक स्पष्टता की दिशा में अग्रसर हो रहा था। उनका राजनीतिक व्यक्तित्व किसी आकस्मिक नेतृत्व का परिणाम नहीं था, बल्कि यह क्रमिक विकास, सतत संघर्ष और जमीनी स्तर पर कार्य करने की दीर्घ प्रक्रिया से निर्मित हुआ। प्रारंभिक जीवन में प्राप्त नैतिक

संस्कार, राष्ट्रीय शिक्षा तथा गांधीवादी विचारधारा ने उनके राजनीतिक दृष्टिकोण को आकार दिया। यही कारण है कि शास्त्री का राजनीतिक जीवन केवल सत्ता–प्राप्ति की आकांक्षा तक सीमित न रहकर राष्ट्रसेवा, जनकल्याण और नैतिक राजनीति का सशक्त उदाहरण बन गया।

लाल बहादुर शास्त्री ने अपने राजनीतिक जीवन की शुरुआत असहयोग आंदोलन (1920–22) के दौरान की। महात्मा गांधी के आह्वान पर जब देशभर के युवाओं ने सरकारी संस्थाओं और अंग्रेजी शिक्षा का बहिष्कार किया, तब शास्त्री ने भी विद्यालय त्याग कर आंदोलन में सक्रिय भागीदारी की। यह उनके राजनीतिक जीवन का प्रथम निर्णायक कदम था, जिसने उन्हें औपनिवेशिक शासन के प्रतिरोध की वैचारिक और व्यावहारिक समझ प्रदान की। असहयोग आंदोलन के दौरान उन्होंने सत्याग्रह, अहिंसा और अनुशासन के सिद्धांतों को केवल सैद्धांतिक रूप में नहीं, बल्कि व्यवहारिक राजनीति के आधार के रूप में आत्मसात किया।[1]

असहयोग आंदोलन की समाप्ति के पश्चात् भी शास्त्री राष्ट्रीय राजनीति से विमुख नहीं हुए। उन्होंने कांग्रेस संगठन के अंतर्गत स्वयं को एक अनुशासित और कर्मठ कार्यकर्ता के रूप में स्थापित किया। इस काल में उनका राजनीतिक योगदान मुख्यतः संगठनात्मक कार्यों से जुड़ा रहा। वे स्थानीय स्तर पर जनजागरण, कांग्रेस सदस्यता अभियान तथा राजनीतिक शिक्षा के प्रसार में सक्रिय रहे। इतिहासकारों का मत है कि शास्त्री जैसे नेताओं ने ही कांग्रेस को एक जनाधारित संगठन का स्वरूप प्रदान किया, जिससे वह केवल अभिजात वर्ग तक सीमित न रहकर जनसाधारण की पार्टी बन सकी।[2]

सविनय अवज्ञा आंदोलन (1930–34) के दौरान लाल बहादुर शास्त्री की भूमिका और अधिक सक्रिय एवं प्रभावशाली हो गई। दांडी मार्च के पश्चात् जब देशभर में नमक सत्याग्रह और कानून–भंग आंदोलन प्रारंभ हुआ, तब शास्त्री ने उत्तर प्रदेश में आंदोलन को संगठित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार, सरकारी करों के विरोध तथा जनता को अहिंसक प्रतिरोध के लिए प्रेरित किया। इस दौरान उन्हें कई बार गिरफ्तार किया गया और कारावास की कठोर परिस्थितियों का सामना करना पड़ा। कारावास का यह अनुभव उनके राजनीतिक जीवन में परिपक्वता और वैचारिक दृढ़ता का कारक बना।[3]

कारावास के दौरान शास्त्री ने राजनीतिक अध्ययन, आत्मचिंतन और वैचारिक संवाद को अपने जीवन का अंग बनाया। जेल में बिताया गया समय उनके लिए केवल दंड नहीं, बल्कि राजनीतिक प्रशिक्षण का माध्यम भी था। उन्होंने भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के इतिहास, समाज की संरचना और औपनिवेशिक शोषण की प्रकृति को गहराई से समझा। इतिहासकार एस. गोपाल के अनुसार, शास्त्री जैसे नेताओं के लिए कारावास एक 'राजनीतिक पाठशाला' सिद्ध हुआ, जहाँ से वे अधिक संगठित और प्रतिबद्ध होकर बाहर आए।[4]

1930 के दशक के उत्तरार्द्ध में शास्त्री कांग्रेस संगठन में एक विश्वसनीय कार्यकर्ता के रूप में उभरे। उन्होंने उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी में विभिन्न दायित्वों का निर्वहन किया और संगठनात्मक अनुशासन को सुदृढ़ करने में योगदान दिया। इस काल में उनका राजनीतिक दृष्टिकोण और अधिक व्यावहारिक हुआ। वे यह समझने लगे कि स्वतंत्रता आंदोलन केवल आंदोलनों तक सीमित नहीं है, बल्कि इसके लिए दीर्घकालिक संगठन, जनसमर्थन और वैचारिक स्पष्टता आवश्यक है। यही कारण है कि शास्त्री ने आंदोलनों के साथ–साथ संगठन–निर्माण को भी समान महत्व दिया।[5]

द्वितीय विश्व युद्ध (1939–45) के दौरान भारतीय राजनीति एक बार फिर निर्णायक मोड़ पर पहुँची। कांग्रेस द्वारा प्रांतीय मंत्रिमंडलों से त्यागपत्र देने के बाद राजनीतिक परिस्थितियाँ और अधिक जटिल हो गईं। इस समय शास्त्री ने कांग्रेस की नीति के अनुरूप ब्रिटिश सरकार के युद्ध प्रयासों का विरोध किया और 'व्यक्तिगत सत्याग्रह' में भाग लिया। इसके परिणामस्वरूप उन्हें पुनः कारावास का सामना करना पड़ा। व्यक्तिगत सत्याग्रह के माध्यम से शास्त्री ने यह स्पष्ट किया कि भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का लक्ष्य केवल सत्ता हस्तांतरण नहीं, बल्कि राष्ट्रीय स्वाभिमान और राजनीतिक स्वतंत्रता की स्थापना है।[6]

1942 का भारत छोड़ो आंदोलन लाल बहादुर शास्त्री के राजनीतिक जीवन का एक अत्यंत महत्वपूर्ण अध्याय है। इस आंदोलन में उन्होंने भूमिगत गतिविधियों, गुप्त संदेशों के प्रसार और संगठनात्मक समन्वय में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। ब्रिटिश सरकार द्वारा कांग्रेस नेतृत्व की गिरफ्तारी के पश्चात् शास्त्री जैसे नेताओं ने आंदोलन को जीवित रखने का प्रयास किया। इस काल में उनका योगदान भले ही सार्वजनिक मंचों पर अधिक दिखाई न देता हो, किंतु संगठनात्मक दृष्टि से वह अत्यंत महत्वपूर्ण था। इतिहासकारों के अनुसार, भारत छोड़ो आंदोलन की निरंतरता में ऐसे ही समर्पित कार्यकर्ताओं की भूमिका निर्णायक रही।[7]

लाल बहादुर शास्त्री के राजनीतिक जीवन की एक प्रमुख विशेषता उनकी गांधीवादी निष्ठा थी। वे अहिंसा, सत्य और नैतिकता को राजनीति का अनिवार्य अंग मानते थे। उनके लिए स्वतंत्रता आंदोलन केवल औपनिवेशिक सत्ता के विरुद्ध संघर्ष नहीं था, बल्कि यह भारतीय समाज के नैतिक पुनर्निर्माण की प्रक्रिया भी थी। यही कारण है कि उन्होंने आंदोलनों के दौरान हिंसा, अराजकता और अनुशासनहीनता का सदैव विरोध किया। उनका यह दृष्टिकोण उन्हें कांग्रेस के भीतर एक संतुलित और विश्वसनीय नेता के रूप में स्थापित करता है।

स्वतंत्रता आंदोलन में शास्त्री का योगदान केवल आंदोलनों में भागीदारी तक सीमित नहीं रहा, बल्कि उन्होंने राजनीतिक विचारधारा के स्तर पर भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वे समाजवाद, लोकतंत्र और राष्ट्रीय एकता के समर्थक थे। यद्यपि वे समाजवादी विचारों से प्रभावित थे, किंतु उन्होंने भारतीय परिस्थितियों के अनुरूप व्यावहारिक दृष्टिकोण अपनाया। उनके विचारों में वर्ग–संघर्ष की अपेक्षा सामाजिक समरसता और नैतिक उत्तरदायित्व पर अधिक बल दिया गया है।

इतिहासकार बिपिन चंद्र के अनुसार, लाल बहादुर शास्त्री जैसे नेता स्वतंत्रता आंदोलन की उस परंपरा का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो दिखावटी नेतृत्व से दूर रहकर संगठनात्मक कार्य और जनसंपर्क को प्राथमिकता देती है।[8] उनका राजनीतिक जीवन इस बात का प्रमाण है कि स्वतंत्रता आंदोलन केवल बड़े नेताओं के भाषणों से नहीं, बल्कि अनगिनत समर्पित कार्यकर्ताओं के सतत प्रयासों से सफल हुआ।

लाल बहादुर शास्त्री का राजनीतिक जीवन और स्वतंत्रता आंदोलन में उनका योगदान भारतीय राष्ट्रीय संघर्ष के इतिहास में एक महत्वपूर्ण अध्याय के रूप में स्थापित होता है। उनका संघर्ष, त्याग और संगठनात्मक कौशल स्वतंत्रता आंदोलन की सामूहिक प्रकृति को समझने में सहायक सिद्ध होता है। शास्त्री का राजनीतिक जीवन यह दर्शाता है कि सादगी, नैतिकता और कर्मठता के माध्यम से भी इतिहास में स्थायी स्थान प्राप्त किया जा सकता है।

निष्कर्ष:

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि निष्कर्षतः लाल बहादुर शास्त्री के राजनीतिक जीवन और स्वतंत्रता आंदोलन में उनके योगदान का समग्र अध्ययन यह प्रतिपादित करता है कि उनका राष्ट्रवादी संघर्ष किसी व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा अथवा क्षणिक राजनीतिक अवसरवाद का परिणाम नहीं था, बल्कि वैचारिक स्पष्टता, नैतिक अनुशासन और संगठननिष्ठ कर्मठता की दीर्घकालिक प्रक्रिया से विकसित हुआ था। स्वतंत्रता संग्राम में उनकी भूमिका इस तथ्य को रेखांकित करती है कि भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन की सफलता केवल नेतृत्व पर आधारित नहीं थी, बल्कि ऐसे समर्पित कार्यकर्ताओं पर भी निर्भर थी जिन्होंने आंदोलन की संरचना को व्यवहारिक रूप प्रदान किया। कांग्रेस संगठन के भीतर लाल बहादुर शास्त्री ने एक अनुशासित एवं उत्तरदायी कार्यकर्ता के रूप में कार्य करते हुए आंदोलन को जमीनी स्तर पर सुदृढ़ किया। असहयोग आंदोलन, सविनय अवज्ञा आंदोलन, व्यक्तिगत सत्याग्रह तथा भारत छोड़ो आंदोलन में उनकी सक्रिय सहभागिता यह प्रमाणित करती है कि वे आंदोलन की निरंतरता और नैतिक दिशा बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे थे। बार–बार कारावास के बावजूद उनका राजनीतिक दृष्टिकोण अहिंसक, लोकतांत्रिक और जनोन्मुखी बना रहा, जो गांधीवादी राजनीतिक परंपरा के प्रति उनकी गहन आस्था को दर्शाता है। शास्त्री का योगदान उस संगठनात्मक नेतृत्व का प्रतिनिधित्व करता है, जिसे प्रायः ऐतिहासिक विमर्श में अपेक्षित स्थान नहीं मिल सका। उन्होंने नीतिगत निर्णयों की अपेक्षा उनके प्रभावी क्रियान्वयन, प्रशासनिक समन्वय और कार्यकर्ता अनुशासन पर विशेष बल दिया। इस प्रकार उनका योगदान स्वतंत्रता आंदोलन को केवल वैचारिक स्तर पर ही नहीं, बल्कि व्यावहारिक और संगठनात्मक स्तर पर भी सुदृढ़ करता है। स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान अर्जित अनुभवों ने शास्त्री के राजनीतिक चरित्र को स्थायित्व, संतुलन और नैतिकता प्रदान की। यही गुण स्वतंत्र भारत में उनके नेतृत्व, प्रशासनिक दृष्टिकोण और लोकतांत्रिक विश्वासों की आधारशिला बने। अतः उनका स्वतंत्रता संग्राम में योगदान स्वतंत्रता–पूर्व और स्वतंत्रता–पश्चात भारत के राजनीतिक इतिहास के बीच एक महत्वपूर्ण सेतु के रूप में उभरता है। इस प्रकार लाल बहादुर शास्त्री का राजनीतिक जीवन और स्वतंत्रता आंदोलन में योगदान भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की उस अनुशासित, कर्मप्रधान और नैतिक नेतृत्व परंपरा को रेखांकित करता है, जिसने आंदोलन को वैचारिक स्थायित्व और संगठनात्मक मजबूती प्रदान की। उनके योगदान का ऐतिहासिक अध्ययन स्वतंत्रता आंदोलन की बहुस्तरीय प्रकृति को समझने के लिए न केवल आवश्यक, बल्कि अनिवार्य भी है।

संदर्भ –

[1] बिपिन चंद्र – इंडियाज स्ट्रगल फॉर इंडिपेंडेंस, नई दिल्ली : पेंगुइन, 1989, पृष्ठ 45–52
[2] सुमित सरकार – मॉडर्न इंडिया (1885–1947), नई दिल्ली : मैकमिलन, 2008, पृष्ठ 110–118
[3] सुमित सरकार – मॉडर्न इंडिया (1885–1947), नई दिल्ली : मैकमिलन, 2008, पृष्ठ 150–158
[4] एस. गोपाल – जवाहरलाल नेहरू : एक जीवनी, खंड–1, नई दिल्ली : ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1975, पृष्ठ 230–235
[5] बिपिन चंद्र – इंडियाज स्ट्रगल फॉर इंडिपेंडेंस, नई दिल्ली : पेंगुइन, 1989, पृष्ठ 210–218
[6] सुमित सरकार – मॉडर्न इंडिया (1885–1947), नई दिल्ली : मैकमिलन, 2008, पृष्ठ 320–328
[7] रामचंद्र गुहा – इंडिया आफ्टर गांधी, नई दिल्ली : पिकाडोर, 2007, पृष्ठ 35–42
[8] बिपिन चंद्र – इंडियाज स्ट्रगल फॉर इंडिपेंडेंस, नई दिल्ली : पेंगुइन, 1989, पृष्ठ 395–400